Date – 25/07/2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – I (Hons.)

Topic – Space and Time : Kant

Scanned with CamScanner

देश और काल (Space and Time)

कांट के अनुसार देश और काल हमारी संवेदनशक्ति के दो प्रागनुभविक आकार हैं जिनमें से छनकर संवेदनाएँ प्रत्यय का रूप धारण करती हैं। इन प्रत्ययों को हमारी तर्कबुद्धि अपनी कोटियों द्वारा व्यवस्थित करके ज्ञान का रूप देती है। अतः कांट के अनुसार ज्ञाता से स्वतंत्र या निरपेक्ष रूप में देश और काल की सत्ता नहीं है।

साधारणतया हम सोचते हैं कि देश और काल विश्व में विद्यमान, वस्तुनिष्ठ तत्व हैं। न्यूटन का ऐसा ही मत था। इसके विपरीत लाइबनित्ज के अनुसार देश और काल की स्वतंत्र सत्ता नहीं है। ये तो वस्तुओं के पारस्परिक संबंधों पर आधारित रचनाएँ हैं। ह्यूम का मत है देश और काल का हमें प्रत्यय नहीं होता। ह्यूम के अनुसार देश और काल प्रत्ययों में सार्वभौमता स्थापित करने की मन की प्रवृत्ति मात्र है। कांट का मत इन सबसे भिन्न है।

कांट देश और काल की दो तरह से व्याख्या करते हैं—

(1) तत्वमीमांसात्मक व्याख्या।

(2) अनुभवातीत व्याख्या।

(1) तत्वमीमांसात्मक व्याख्या के अन्तर्गत कांट दो बातें स्पष्ट करना चाहते हैं—

(क) देश और काल संवेदनशक्ति के प्रागनुभविक आकार हैं।

(ख) देश और काल शुद्ध प्रत्यक्ष (Pure percepts) हैं, प्रत्यय (concepts) नहीं।

देश और काल की प्रागनुभविकता सिद्ध करने के लिए कांट निम्न तर्क देते हैं—

(a) देश और काल का ज्ञान हमें अनुभव से नहीं मिलता। आनुभविक ज्ञान की यह विशेषता है कि उसका विरोधी या विपरीत सोचा जा सकता है। किन्तु देश और काल के विषय में ऐसा संभव नहीं है। देश त्रिविमीय होता है किन्तु उसे किसी अन्य रूप में, तीन से कम या अधिक विमाओं से संपन्न करके सोचना संभव नहीं है। फिर, काल का क्रम अपरिवर्ती होता है। काल-क्रम को

Scanned with CamScanner

प्रतिवर्ती रूप में सोचा ही नहीं जा सकता। इस प्रकार अनुभवगम्य वस्तुओं और घटनाओं के विपरीत देश और काल के स्वरूप को अन्यथा मानकर सोचा नहीं जा सकता। इससे सिद्ध होता है कि ये वस्तुनिष्ठ नहीं, बल्कि प्रागनुभविक हैं।

(b) देश और काल इसलिए भी प्रागनुभविक हैं क्योंकि इनके अभाव की कल्पना नहीं की जा सकती। देश और काल को हम बिना वस्तुओं और घटनाओं के सोच सकते हैं, परंतु वस्तुओं और घटनाओं को देश और काल के बिना नहीं सोच सकते।

पुनः देश और काल को शुद्ध प्रत्यय सिद्ध करने के लिए कांट ने दो तर्क दिए हैं-

(i) देश और काल शुद्ध प्रत्यय हैं, सामान्य प्रत्यय नहीं। यदि देश और काल सामान्य प्रत्यय होते तो इनके अनेक दृष्टान्त मिलते। परंतु इनके दृष्टान्त नहीं मिलते। देश और काल दोनों ही अपने-आप में विशिष्ट इकाई हैं। इसलिए ये दोनों शुद्ध प्रत्यय हैं, प्रत्यय नहीं।

(ii) कांट देश और काल को "Infinite given magnitudes" कहते हैं अर्थात् देश और काल का जो भी खंड किया जाए। वह उनका सीमित आन्तरिक खण्ड ही होगा। क्योंकि देश और काल स्वतः असीम और अखंड हैं। इससे भी सिद्ध होता है कि वे प्रागनुभविक प्रत्यय हैं।

इस प्रकार कांट के अनुसार देश और काल दोनों ही संवेदनशक्ति के शुद्ध प्रागनुभविक आकार हैं। परन्तु कांट के अनुसार इन दोनों में एक महत्वपूर्ण अन्तर है। देश बाह्य-इन्द्रिय का आकार है और काल आंतर-इन्द्रिय का। बाहरी संवेदन दैशिक और कालिक दोनों होते हैं। परन्तु हमारी आन्तरिक अनुभूतियाँ, हमारे प्रत्यय केवल कालिक होते हैं, दैशिक और कालिक दोनों होते हैं। परन्तु हमारी आन्तरिक अनुभूतियाँ हमारे प्रत्यय केवल कालिक होते हैं, दैशिक नहीं। कांट के अनुसार काल ही ऐसा सामान्य माध्यम है जिसके आधार पर संवेदन और विचार शक्तियाँ एक दूसरे का आलिंगन करती हैं।

Scanned with CamScanner